जा सकता है ।

की जा सकती है तथा उस मुद्रा से दिल्ली में दूसरा मकान ... दूर कर दिया है । उदाहरण के

Paper-II Part-I 6.5.202

मुद्रा की परिभाषा (Definition of Money)

ग्रेज़ी भाषा 'Money' शब्द लैटिन भाषा के 'Moneta' शब्द से बना है । मोनेटा देवी जूनो (Goddess Juno) है जिसके मन्दिर में रोम की मुद्रा बनाने का कार्य किया जाता था । देवी जूनो को स्वर्ग की रानी माना गया इसी कारण से मुद्रा को स्वर्गीय आनन्द का साधन समझा जाता था और देवी के मन्दिर में मुद्रा-निर्माण का किया जाता था । हिन्दी में 'मुद्रा' शब्द का प्रयोग मुहर या चिह्न के अर्थ में भी किया जाता है । यही कारण है स वस्तु पर सरकारी चिह्न या मुहर लगाया जाता था उसे मुद्रा कहा जाता था ।

अर्थशास्त्र में मुद्रा की अनेक और विभिन्न दृष्टिकोण से परिभाषाएँ दी गयी हैं । मुद्रा की कुछ परिभाषाएँ त (narrow) हैं तो कुछ विस्तृत (wide) तथा कुछ परिभाषाएँ अन्य बातों पर आधारित हैं । उदाहरण के लिए, न ने मुद्रा की परिभाषा संकुचित अर्थ में दी है । **प्रो० राबर्टसन** (Robertson) के अनुसार, **"मुद्रा वह वस्तु सका प्रयोग ऐसी किसी भी वस्तु के लिए किया जाता है जो वस्तुओं के मूल्य के भुगतान अथवा अन्य त्वों को निपटाने में व्यापक रूप से ग्रहण की जाती है ।"** (Money is a commodity which is used to te anything which is widely accepted in payment of goods or in discharge of other business obli-on.) लेकिन राबर्टसन द्वारा दी गई इस परिभाषा में मुद्रा के केवल सर्वमान्यता के गुण की ओर संकेत किया गया अत: मुद्रा की यह परिभाषा अधूरी है । दूसरी ओर, प्रो० हार्टले विदर्स ने मुद्रा की विस्तृत परिभाषा दी है । **हार्टले र्स** (Hartley Withers) के अनुसार, **"मुद्रा वह है जो मुद्रा का कार्य करती है ।"** (Money is what money s.) यह परिभाषा विस्तृत इसलिए है कि इसके अनुसार वे सभी वस्तुएँ मुद्रा कही जायेंगी जिनका प्रयोग विनिमय माध्यम के रूप में किया जाता है । अतः सिक्के एवं पत्र-मुद्रा के अलावा चेक, ड्राफ्ट आदि को भी मुद्रा कहा गा । लेकिन चेक, ड्राफ्ट आदि को वास्तविक मुद्रा नहीं कहा जा सकता क्योंकि उनमें सर्वमान्यता का गुण नहीं जाता ।

मुद्रा की परिभाषाओं को उनकी प्रकृति के आधार पर निम्नलिखित वर्गों में बाँटा गया है—

1. वर्णनात्मक अथवा कार्यवाहक परिभाषाएँ (Descriptive of Functional Definitions);
2. वैधानिक परिभाषाएँ (Legal Definitions); तथा
3. सामान्य स्वीकृति पर आधारित परिभाषाएँ (Definitions based on General Acceptability) ।

वर्णनात्मक अथवा कार्यवाहक परिभाषाएँ (Descriptive or Functional Definitions)

इस वर्ग में वे परिभाषाएँ आती हैं जिनमें मुद्रा की परिभाषा के स्थान पर उसके कार्यों का वर्णन किया गया है । परिभाषाओं में यह नहीं बतलाया गया है कि मुद्रा क्या है, क्योंकि कुछ अर्थशास्त्रियों के अनुसार मुद्रा का अर्थ के कार्यों के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है । **हार्टले विदर्स** (Hartley Withers) के अनुसार, **"मुद्रा वह है जो मुद्रा का कार्य करती है ।"** (Money is what money does.)

टॉमस (Thomas) के शब्दों में, **"मुद्रा एक वस्तु है जो मूल्य के मापक तथा अन्य सभी वस्तुओं के बीच विनिमय के माध्यम का कार्य करने के लिए सामान्य मत से चुन ली जाती है ।"** (Money is a commodity chosen by common consent to be a measure of value and a means of exchange between all other commodities.)

कोलबोर्न (Coulborn) के अनुसार, **"मुद्रा वह है जो मूल्य का मापक और भुगतान का साधन है ।"** (Money may be defined as the means of valuation and payment.)

आलोचना—मुद्रा की वर्णनात्मक अथवा कार्यवाहक परिभाषाएँ सरल एवं व्यावहारिक हैं । लेकिन इनका दोष यह है कि इनमें मुद्रा की परिभाषा न देकर उसका वर्णन किया गया है, और हम जानते हैं कि परिभाषा (Definition) तथा वर्णन (Description) में अन्तर है । इसके अलावे इन परिभाषाओं में मुद्रा की वैधानिक मान्यता पर ध्यान नहीं दिया गया है । किसी वस्तु को मुद्रा कहलाने के लिये उसमें वैधानिक मान्यता का होना जरूरी है ।

वैधानिक परिभाषाएँ *(Legal Definitions)*

इस वर्ग में वे परिभाषाएँ आती हैं जो **'मुद्रा के राज्य सिद्धान्त'** (State Theory of Money) पर आधारित हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार मुद्रा वही वस्तु हो सकती है जिसे सरकार ने मुद्रा घोषित कर दिया हो । इसके अन्तर्गत जर्मन अर्थशास्त्री नैप तथा ब्रिटिश अर्थशास्त्री हॉट्रे की परिभाषाएँ प्रमुख हैं ।

नैप (Knapp) के अनुसार, **"मुद्रा की सृष्टि राजकीय नियमों के द्वारा की जाती है ।"** (Money is created by the imprimatu of law.)

हॉट्रे (Hawtrey) ने भी नैप का दृष्टिकोण अपनाया है लेकिन उन्होंने नैप की परिभाषा में सुधार लाने की चेष्टा की है । हॉट्रे के अनुसार, मुद्रा केवल विधिग्राह्य (Legal tender) ही नहीं, वरन् हिसाब की इकाई (Unit of Account) भी है । इस प्रकार यह नैप की परिभाषा से कुछ अच्छी है ।

आलोचना—वैधानिक परिभाषाओं में सरकार के अधिकार अथवा सरकारी कानून को अधिक महत्त्व दिया गया है तथा सामान्य स्वीकृति (General Acceptability) की अवहेलना की गई है । मुद्रा को जनता द्वारा स्वीकार्य होना भी जरूरी है । केवल विधिग्राह्य होने से ही कोई वस्तु मुद्रा नहीं हो सकती । उदाहरण के लिए, 1923 में जर्मनी में भंयकर मुद्रा-स्फीति (Inflation) के कारण लोगों ने मार्क के नोटों में लेन-देन करने से इन्कार कर दिया था । इस प्रकार मुद्रा में सामान्य स्वीकृति का गुण होना भी आवश्यक है ।

सामान्य स्वीकृति पर आधारित परिभाषाएँ *(Definitions based on General Acceptability)*

इस वर्ग में वे परिभाषाएँ आती हैं जो मुद्रा की सामान्य स्वीकृति (General Acceptability) पर आधारित है। इन परिभाषाओं में भी कुछ संकुचित हैं तो कुछ विस्तृत हैं ।

वाकर (Walker) के अनुसार, **"मुद्रा वह है जो वस्तुएँ खरीदने के भुगतान में तथा ऋणों के अन्तिम भुगतान में स्वतन्त्रतापूर्वक हस्तान्तरित होती रहती है और जिसे भुगतान करने वाले व्यक्ति के चरित्र अथवा साख का पता लगाये बिना स्वीकार किया जाता है और जो व्यक्ति इसे प्राप्त करता है उसका विचार इसे स्वयं उपभोग नहीं कर उसे किसी-न-किसी समय विनिमय द्वारा हस्तान्तरित करने का होता है ।"** (Money is that which passess freely from hand to hand in full payment to goods, in final discharge of indebtedness being accepted equally without reference to the character or credit of the person tendering it and without any intention on the part of the person receiving it himself to consume it or otherwise use it than by passing it on, sooner or later, in exchange.)

प्रो० मार्शल (Marshall) के अनुसार, **"मुद्रा के अन्तर्गत वे सभी वस्तुएँ शामिल होती हैं जो किसी समय विशेष या स्थान विशेष में बिना सन्देह और जाँच के वस्तुओं तथा सेवओं को खरीदने और खर्चे चुकाने के**

साधन के रूप मे प्राय: प्रचलित होती है ।" (Money includes all those things which are (at any given time or place) generally current without doubt or special enquiry as a means of purchasing commodities or services and of defraying expenses.) स्पष्ट है कि इस परिभाषा के अनुसार चेक, हुण्डी आदि को मुद्रा नहीं माना जायेगा क्योंकि बिना जाँच किये कोई भी व्यक्ति इन्हें भुगतान में स्वीकार नहीं करता है ।

सेलिगमैन (Seligman) के अनुसार, **"मुद्रा वह वस्तु है जिसे सामान्य स्वीकृति प्राप्त है ।"** (Money is one thing that possesses general acceptability.)

कोल (G.D.H. Cole) के अनुसार, **"मुद्रा क्रय-शक्ति है, कोई भी वस्तु जो दूसरी वस्तुओं को खरीदती है ।"** (Money is purchasing power—Something which buys other things.)

प्रो एली (Ely) के अनुसार, **"मुद्र वह है जिसका विनिमय के माध्यम के रूप में स्वतंत्रतापूर्वक हस्तांतरण होता है और जो ऋणों के अन्तिम भुगतान में सामान्य रूप में स्वीकार की जाती है ।"** (Anything that passes freely from hand to hand as a medium of exchange and is generally received in final discharge of debts.)

हाम (Halm) के अनुसार, **"मुद्रा शब्द का प्रयोग विनिमय के माध्यम तथा मूल्य के मान दोनों के लिए किया गया है ।"** (The word money has been used to designate the medium of exchange as well as the standard of value.)

क्राउथर (Crowther) के अनुसार, **"कोई वस्तु जो विनिमय के माध्यम के रूप में सामान्यत: सर्वग्राह्य हो तथा साथ ही जो मूल्य के मापक एवं मूल्य-संचय का कार्य करती हो, मुद्रा कहलाती है ।"** (Anything that is generally acceptable as means of exchange and at the same time that acts as a measure and as a store of value is called money.)

प्रो केन्स (Keynes) के अनुसार, "मुद्रा वह है जिसे देकर ऋण-संविदा तथा मूल्य-संविदा का भुगतान किया जाता है **तथा जिसके रूप में सामान्य क्रयशक्ति का संचय किया जाता है ।"** (Money is that by the delivery of which debt-contracts and price-contracts are discharged and in the shape of which a store of general purchasing power is held.)

आलोचना (Criticism)—उपर्युक्त सभी परिभाषाएँ मुद्रा में सर्वमान्यता अथवा सामान्य स्वीकृति के गुण को स्वीकार करती हैं । अत: इन सभी परिभाषाओं के आधार पर चेक, बिल, ड्राफ्ट आदि को मुद्रा समझा जाना चाहिए । विकसित देशों में इन साख-पत्रों को भले ही मुद्रा माना जाता है, लेकिन अविकसित देशों में सामान्य स्वीकृति के आधार पर इन्हें मुद्रा नहीं समझा जा सकता । फिर भी क्राउथर तथा केन्स की परिभाषाएँ बहुत हद तक उपयुक्त परिभाषाएँ हैं ।

मुद्रा की उचित परिभाषा—मुद्रा की विभिन्न परिभाषाओं के अध्ययन के बाद हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि ये परिभाषाएँ मुद्रा के किसी विशिष्ट पक्ष पर ध्यान देती है तथा कोई भी परिभाषा मुद्रा के सम्पूर्ण स्वरूप को प्रकाश में नहीं लाती । अत: मुद्रा की उपयुक्त परिभाषा हम इस प्रकार से दे सकते हैं—**"सामान्य स्वीकृति प्राप्त, विधि ग्राह्य एवं स्वतंत्र रूप से प्रचलित कोई भी वस्तु जो विनिमय के माध्यम, मूल्य के सामान्य मापक, ऋण के भुगतान का मापदण्ड तथा अर्घ के संचय के साधन के रूप में कार्य करती है, मुद्रा कहलाती है ।"**